"जो भी हो, वह मेरे लिए डटी रही। उसका दृढ़ सहयोग ना मिलता तो मैं रसातल में हो सकता था"
- कस्तूरबा गाँधी के लिए महात्मा गाँधी का कथन

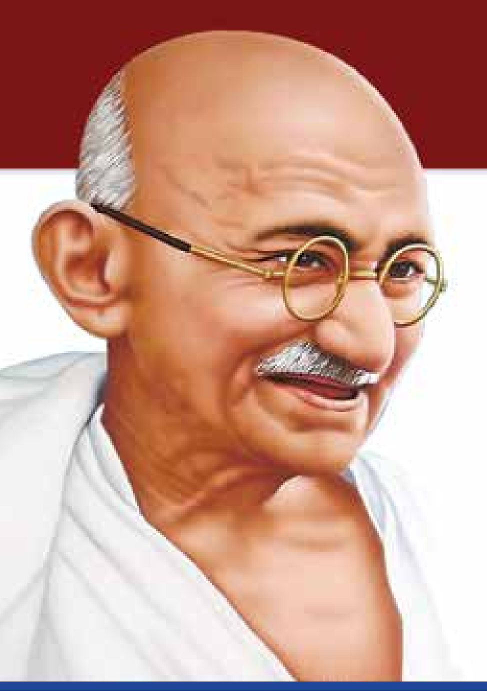

कनेक्ट

वर्ष.- 6, अंक-5 मई 2019

अपशिष्ट प्रबंधन विशेषज्ञों का राष्ट्रीय सम्मलेन - 22-28 अप्रैल

इस माह एमजीएनसीआरई के अत्याधुनिक ई-रिसोर्स सेंटर ने औपचारिक रूप से कार्य करना शुरू कर दिया है – जो परिषद के लिए मील का पत्थर है। अपशिष्ट प्रबंधन विशेषज्ञों का राष्ट्रीय सम्मलेन 22 से 28 अप्रैल को आयोजित किया गया। देश भर के उद्योग एवं विषय विशेषज्ञों ने आकर्षक दृश्यों के माध्यमों से अपने व्याख्यान और प्रजेंटेशन रिकॉर्ड कराये. केस स्टडी और प्रासंगिक ऑनसाइट दृश्यों के साथ अंतःस्थापित ये व्याख्यान अपशिष्ट प्रबंधन अध्ययन के छात्रों के लिए संदर्भ संसाधन का कार्य करेंगे।

डॉ. अरुणा सोनवाने, परीक्षा नियंत्रक, सिम्बायोसिस ओपन स्किल्स यूनिवर्सिटी मुंबई, ने वेट मैनेजमेंट के बाजार एकीकरण पर प्रस्तुतिकरण दिया

डॉ. अनामिका गुलाटी, विशेषज्ञ वैज्ञानिक लेखक, नोवार्टिस प्राइवेट लिमिटेड ने जैव-चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन पर बात की

डॉ. सोनल चतुर्वेदी, क्षमता निर्माण प्रशिक्षक, दिल्ली विश्वविद्यालय, ने ई-अपशिष्ट प्रबंधन पर प्रस्तुति दी

ऐतिहासिक उपलब्धि - अपशिष्ट प्रबंधन, विषय विशेषज्ञ अपनी बातचीत रिकॉर्ड करते हुए .....

मुंबई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. सचिन के कांबले ने अपशिष्ट प्रबंधन पर परियोजना प्रबंधन के रूप में प्रस्तुत किया।

डॉ. अनुपमा हर्षल, वैज्ञानिक, इंडो यूएस फोल्डस्कोप ग्रांट, ने होटल अपशिष्ट प्रबंधन पर बात की

अपोलो हॉस्पिटल्स की वरिष्ठ परिचालन प्रबंधक सुश्री अनीता अंतू ने बायो मेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट पर बात की

डॉ. वंदना माथुर, NIESBUD, दिल्ली, उद्यमी प्रेरक प्रशिक्षक, ने "अपशिष्ट प्रौद्योगिकी" पर बात की

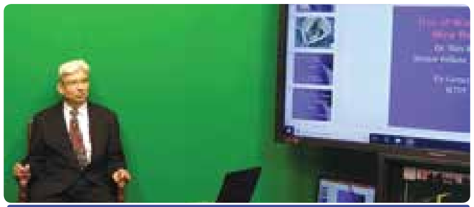

डॉ. एस के दुबे, सीनियर रिसर्च फेलो, TERI, ने पर्यावरण प्रभाव विश्लेषण पर विस्तार से बताया

डॉ. दीप्ति शर्मा, संस्थापक-निदेशक टेरानेरो एनवायरनमेंटल सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, सुधार, उपचार और आवरण पर प्रस्तुति

संपादक की टिप्पणी

देश भर में रूरल मैनेजमेंट और रूरल इंगेजमेंट एजुकेशन को बढ़ावा देने और उच्च मानकों को बनाए रखने की बड़ी आवश्यकता को देखते हुए, विशेषज्ञ चर्चाओं को रिकॉर्ड करने और उन्हें सभी उच्च शैक्षणिक संस्थानों में इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रसारित करने के लिए एमजीएनसीआरई में रिकॉर्डिंग सुविधा के साथ एक ई-रिसोर्स सेंटर रखा गया था।

इससे सभी राज्य और केंद्रीय विश्वविद्यालयों, आईआईएम, आईआईटी / एनआईटी / एचईआई के साथ बातचीत को बढ़ावा देने की उम्मीद है। साथ ही रूरल कंसर्न के हस्तांतरण पर लगने वाली लागतों में भी कटौती की उम्मीद है. इस ई-लर्निंग सेंटर में बहुत से संकाय विकास कार्यक्रम आयोजन हुआ है जिसमें ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण सहभागिता के श्रेष्ठ प्रशिक्षक शामिल होंगे।

पूरे देश में इलेक्ट्रॉनिक संस्करण उपलब्ध होगा। 22 से 28 अप्रैल तक अपशिष्ट प्रबंधन के विशेषज्ञों का राष्ट्रीय सम्मलेन हमारे रिकॉर्डिंग स्टूडियो को औपचारिक रूप देने का पहला प्रयास था। ग्रामीण शिक्षा में मील का पत्थर स्वरुप यह उपलब्धि इलेक्ट्रॉनिक शिक्षण के एक नए युग की शुरुआत है।

इस वर्ष के दौरान, परिषद ने ग्रामीण शिक्षा और पाठ्यचर्या विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न केंद्रीय / राज्य विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी समझौता ज्ञापन (MoU) में प्रवेश किया।

एमजीएनसीआरई ने ओरिएंटेशन कम ट्रेनिंग वर्कशॉप की शुरूआत विश्वविद्यालयों के साथ पंडित मदनमोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं प्रशिक्षण मिशन (PMMMNMTT) और एचआरडीसी (HRDC) कार्यक्रमों के अंतर्गत की है, जिसका उद्देश्य प्रायोगिक शिक्षण को सीखना और समझना, गाँधीजी की नई तालीम तथा कम्युनिटी इंगेजमेंट द्वारा प्रशिक्षकों को सीखने के लिए सक्षम बनाना है, इसके उद्देश्य के रूप में संस्थान अनुभवात्मक शिक्षा, गांधीजी की नई तालीम और सामुदायिक सहभागिता तथा इसके द्वारा ग्रामीण व राष्ट्रीय विकास में भाग लेते हैं। कम्युनिटी इंगेजमेंट या सामुदायिक जुड़ाव सीखने के फायदे हैं कि, इसके बाद छात्र सहभागिता व्यवहार सीखते हैं, जीवन कौशल सीखते हैं और प्रशिक्षण से लाभ प्राप्त करते हैं। गांधीजी की नई तालीम और ग्रामीण समुदाय अनुबंध खुले क्षेत्र की जांच पर आधारित और कार्रवाई उन्मुख है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे द्वारा विकसित प्रायोगिक अधिगम पाठ्यक्रम और ग्रामीण अनुबंध पाठ्यक्रम तथा प्रक्षेपवक्र विकास को यूजीसी और एआईसीटीई की स्वीकृति है।

11 अप्रैल के दिन को कस्तूरबा गांधी की 150 वीं जयंती के रूप में चिह्नित किया गया। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के अपने मूल सिद्धांतों को कस्तूरबा गांधी से सत्याग्रह के साथ सीखा। एमजीएनसीआरईआरई ने इस दिन को मनाने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया क्योंकि इस कार्यक्रम में नई तालीम पहल दिवस और कई शैक्षणिक संस्थानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। मैंने गर्व के साथ वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए अपनी उपलब्धियों को सामने रखा।

पाठ्यक्रम विकास पर गोल मेज	38
पाठ्यचर्या विकास पर कार्यशालाएँ	30
नई तालीम पर कार्यशालाएं	89
7 दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम	24
एनएसएस अधिकारियों के रूरल इमर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	21
पाठ्यक्रम रूपरेखा पर परामर्श कार्यशालाएं	7
PMMMNMTT प्रोजेक्ट	
गोलमेज	60
कार्यशालाएं	88
संकाय विकास कार्यक्रम (FDPs)	47
RITPs	24
FIP	3
यूनिसेफ (UNICEF) प्रोजेक्ट: क्षमता निर्माण-तेलंगाना	10

नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत संकाय विकास कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और गोलमेजों के साथ देश भर में संपन्न हुई।

डॉ. डब्यू जी प्रसन्ना कुमार

चेयरमैन, एमजीएनसीआरई

ग्रामीण प्रयोजनों ने शैक्षणिक क्षेत्र में एक पिछली जगह ले ली है। उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम का विकास पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों और उनके प्रतिनिधि उच्च शिक्षण संस्थानों की आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए, शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार और आजीविका पर ध्यान केंद्रित करने के साथ प्रमुख सामाजिक और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए एमजीएनसीआरई की खास पहल शामिल हैं। परिषद ग्रामीण उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम को मजबूत करना चाहती है और संकाय सदस्य इसका आदान-प्रदान करते हैं। एमजीएनसीआरई के लिए उच्च शैक्षिक धाराओं में शामिल हैं: ग्रामीण अध्ययन, ग्रामीण विकास, ग्रामीण

प्रबंधन, सामाजिक कार्य और शिक्षा। ग्रामीण संस्थानों की क्षमता निर्माण और व्यवसायीकरण, कौशल विकास, उद्यमशीलता, आजीविका, सामुदायिक पहल, स्थानीय समूहों की रचनात्मकता और सक्रिय विकास कार्रवाई परिषद के अनुसंधान और हस्तक्षेपों की मुख्य सामग्री है।

उन्नत भारत अभियान (UBA) के तहत एमजीएनसीआरई ने रूरल कम्युनिटी एंगेजमेंट के लिए तकनीकी अभिविन्यास कार्यक्रमों की सुविधा के लिए संस्थानों के साथ सहयोग शुरू किया है। प्रशिक्षकों की सुविधा के लिए हमारे पास रूरल इमर्शन मैनुअल है। गांधीजी की 150 वीं जयंती एमजीएनसीआरई के लिए एक वरदान के रूप में आई है और इस अवसर का उपयोग नागालैंड से कश्मीर घाटी और केरल तक के लिए अनुभवात्मक अध्ययन के कार्यक्रमों का संचालन करके बड़े पैमाने पर किया जा रहा है।

देश भर के विश्वविद्यालयों / HEI के साथ व्यापक रूप से बातचीत करके एमजीएनसीआर के कर्मियों द्वारा निस्संदेह रूप से कठिन कार्य करने वाले युवाओं को प्रशिक्षण, पुनः प्रशिक्षण और सलाह दी जा रही है।

मुझे वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए एमजीएनसीआर की निम्नलिखित उल्लेखनीय उपलब्धियों को उजागर करने का हर्ष है।

अनुसंधान और छात्रवृत्ति	
इंटर्न्स	61
रोलिंग इंटर्न्स	50
स्माल रिसर्च प्रोजेक्ट	72
रिसर्च सर्वेक्षण	3
तिमाही प्रकाशन	15
जर्नल	2
शोध प्रकाशन	69
जोड़े गए पाठ्यक्रम विकास	1
पी जी डिप्लोमा पाठ्यक्रम	1
एमबीए इन वेस्ट मैनेजमेंट एंड सोशल इंटरप्रेयोरशिप	1
पी जी कोर्स इन रूरल मैनेजमेंट	1

डॉ. भरत पाठक

उपाध्यक्ष, एमजीएनसीआरई

तमिलनाडु

मद्रास विश्वविद्यालय ने एमबीए पाठ्यक्रम में ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने का मार्ग प्रशस्त किया

कार्यशाला: भारत में अपनी तरह की पहली कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए, एमबीए कोर्स के लिए ग्रामीण उद्यमिता पर टेट-स्तरीय परामर्श पाठ्यचर्या विकास कार्यशाला, मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर. दुरैसामी ने कहा, "ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में प्रवासन शहरी अवसंरचना और कानून व्यवस्था के मुद्दों की गुणवत्ता में कमी जैसी समस्याएं पैदा कर रहा है। सस्ते श्रम के रूप में प्रवासियों का शोषण किया जाता है। मानसून की अनियमितता के कारण ग्रामीण परेशान हैं"। उन्हें विश्वास था कि, ग्रामीण उद्यमिता पर प्रबंधन अध्ययन विभाग द्वारा प्रस्तुत अनिवार्य पाठ्यक्रम, जिसे जुलाई 2019 से लागू किया जाएगा वह ग्रामीण समुदाय के जीवन स्तर के सुधार में पूरक होगा। यह कार्यशाला 25 अप्रैल 2019 को मद्रास विश्वविद्यालय के प्रबंधन अध्ययन विभाग में आयोजित की गई थी। चेपॉक कैंपस और प्रबंधन विभाग के 30 संकायों ने भाग लिया और आरजीएनआईवायडी (RGNIYD) सहित विभिन्न संबद्ध कॉलेजों / संबद्ध संस्थानों ने भाग लिया।

एमजीएनसीआरई की प्रतिनिधि पदमा जे ने कार्यशाला को सुविधाजनक बनाया वे गेस्ट ऑफ ऑनर भी थीं। उन्होंने ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में एमजीएनसीआरई द्वारा किए जा रहे कार्यों से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

उन्होंने साझा किया कि एमजीएनसीआरई ने एक मसौदा पाठ्यक्रम तैयार किया है उद्यमिता, जिसमें ग्रामीण संकट को कम करने, ग्रामीण तन्यता और उन्नत भारत अभियान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मुख्य पाठ्यक्रम के भाग के रूप में प्रबंधन अध्ययन के सुधार और सुधार की आवश्यकता है।

उन्होंने इस उम्मीद के साथ निष्कर्ष निकाला कि इस दिन के सत्र का परिणाम एक पाठ्यक्रम होगा, जो ग्रामीण युवाओं को एमबीए छात्रों से मार्गदर्शन लेने में मदद करेगा और साथ ही एमबीए छात्रों को ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि निर्माण के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमशीलता के अवसरों को देखने के लिए प्रोत्साहित और ज्ञानवर्धक व सशक्तिकरण सत्रों के लिए प्रेरित करता है।

इसके पूर्व, डॉ. आर थेनमोही, हेड, डीओएमएस (DOMS) ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और आग्रह किया कि बड़े पैमाने पर उत्पादन करने के बजाय जनता द्वारा उत्पादन किया जाना चाहिए तभी जीवन स्तर में सुधार होगा। उन्होनें अपने संबोधन में इस बात को दोहराया कि ग्रामीण उद्यमी ही ग्रामीण औद्योगीकरण का निर्माण करते हैं। ग्रामीण उद्यमी थिरु. आर. जगनाथन, नल्लेकेराय – ऑर्गेनिक फार्म, और थिरु ए अनबगलन रॉयल ट्रेडर्स, सेलम ने सत्र में अपने अनुभवों को प्रतिभागियों के साथ साझा किया। वर्कशॉप **कॉर्डिनेटर** और असिस्टेंट डीओएमएस डॉ एल कनगालक्ष्मी ने उद्घाटन सत्र में अपना धन्यवाद ज्ञापित किया।

कर्नाटक

गुलबर्गा यूनिवर्सिटी में नई तालीम पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन - 30 अप्रैल

प्रो सुरेखा BOS गुलबर्गा विश्वविद्यालय, प्रोफेसर निंगम्मा BOS मैसूर विश्वविद्यालय, प्रो विश्वनाथ चिमकोर्ड गुलबर्गा विश्वविद्यालय, प्रो. लखनवा डीन एजुकेशन फैकल्टी बीजापुर, प्रो आर आर मदुनकर, डीन एजुकेशन संकाय, धारवाड़, प्रो जयम्मा बैंगलोर विश्वविद्यालय सम्माननीय अतिथि रहे। डॉ दिवाकर सीनियर फैकल्टी,एमजीएनसीआरई ने कार्यशाला का संचालन किया।

बिदर में एचके सोसाइटी कॉलेजों के प्रमुख तथा प्रिंसिपल के साथ गोलमेज बैठक - 26 अप्रैल

मूल्य आधारित शिक्षा के साथ नई तालीम के महत्व और मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की व्याख्या करते हुए।

जम्मू और कश्मीर

एनएसएस के साथ क्लस्टर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर में सामुदायिक अनुबंध पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन - 25 अप्रैल

क्लस्टर यूनिवर्सिटी के सहायक रजिस्ट्रार गुलजार अहमद शाह ने मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि, हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों के माध्यम से रूरल इमर्शन पर समुदाय अनुबंध की प्रक्रिया को कैसे विकसित और बढ़ावा दिया जाए। विसर्जन बाकल अहमद, अतिथि के रूप में डीन सामाजिक विज्ञान प्रो ऑनर ने कहा कि एनएसएस स्वयंसेवकों और छात्रों को सरकार और समाज के बीच एक सेतु की तरह काम करना चाहिए। एमजीएनसीआरई प्रशिक्षक डॉ सैयद ज़हरा ने एक दिवसीय कार्यशाला ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों को साझा किया। सभी कार्यक्रम अधिकारियों ने एनएसएस स्वयंसेवकों के लिए दो क्रेडिट और इस विचार के लाभों को शामिल करने जैसी विचार का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि एनएसएस के लिए अधिक से अधिक शिविर होने चाहिए ताकि हम ग्रामीण समुदाय का विकास कर सकें और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, स्वच्छता, स्वास्थ्य, सफाई व्यवस्था तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं और जरूरतों के बारे में ग्रामीण समुदाय को जागरूक कर सकें। क्लस्टर यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो शेख जाविद ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और एमजीएनसीआरई के साथ सहयोग का स्वागत किया। उन्होंने इस सामुदायिक सहभागिता पाठ्यक्रम प्रतिभागियों से कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेने और साथ आने का आग्रह किया जो राज्य के छात्रों और शिक्षकों और समाज को लाभान्वित करेगा। उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्षमता, आत्मविश्वास निर्माण, सहिष्णुता और कौशल के इर्द-गिर्द घूमती गांधीवादी विचारधारा के एकीकरण का भी स्वागत किया।

बाँकुड़ा यूनिवर्सिटी, बाँकुड़ा, पश्चिम बंगाल

ग्रामीण प्रबंधन / अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर 22 अप्रैल को गोलमेज सम्मेलन का आयोजन। गोल मेज के अतिरिक्त 23 अप्रैल को सेमिनार हॉल, सामाजिक कार्य विभाग, बांकुरा विश्वविद्यालय में 22 प्रतिभागियों के साथ सामाजिक कार्य विभाग, बांकुरा विश्वविद्यालय, बांकुरा, पश्चिम बंगाल के साथ साझेदारी में प्रायोगिक शिक्षा, सामुदायिक अनुबंध/ रूरल इमर्शन पर एक छोटी सहयोगी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रो देब नारायण बंदोपाध्याय, कुलपति, बाँकुड़ा विश्वविद्यालय, मुख्य अतिथि रहे। अन्य गणमान्य व्यक्तियों में प्रो. सुबीर कुमार रॉय एचओडी, डिपार्टमेंट ऑफ़ लॉ और पीजीसीएचएस सचिव, प्रो जयंत कुमार साहा (डीन), प्रो देबाशीष मजुमदार, रजिस्ट्रार, डॉ तनुका रॉय सिन्हा, एचओडी सामाजिक कार्य विभाग, डॉ सुचेतना घोष, असिस्टेंट प्रोफेसर, सामाजिक कार्य विभाग और एमजीएनसीआरई सीनियर फैकल्टी व प्रो डी के चक्रवर्ती मौजूद रहे।

प्रो तनुका ने कहा कि यह कार्यशाला ग्रामीण समस्याओं को समझने में मदद करती है कि छात्र कैसे ग्रामीण लोगों बातचीत करें, छात्रों के ग्रामीण विसर्जन और ग्रामीण समुदाय के साथ काम करने व मध्यस्थता के लिए किस प्रकार की गतिविधियों और रणनीतियों की योजना बनाई जाए। उन्होनें इस कार्यशाला के संचालन के लिए एमजीएनसीआरई को धन्यवाद दिया। माननीय कुलपति ने विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान ग्रामीण प्रबंधन को शुरू करने की पुष्टि की। ग्रामीण प्रबंधन एक उभरता हुआ विषय है जिसके माध्यम से ग्रामीण समस्याओं और सतत विकास को संबोधित किया जाना चाहिए। प्रो. सुबीर रॉय ने ग्रामीण जीवन और ग्रामीण प्रबंधन को समझने के महत्व के बारे में बताया कि छात्रों के रोजगार को बढ़ाने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों, जिसमें अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता को लिया जा सकता है। तकनीकी सत्रों के अंत में, प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। गतिविधि आधारित शिक्षण अभ्यासों में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों ने रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ सक्रिय रुचि ली।

टेक्नोइंडिया यूनिवर्सिटी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

Roundtable – 16th April टेक्नो इंडिया यूनिवर्सिटी बिल्डिंग, टेक्नो इंडिया यूनिवर्सिटी में गोलमेज सम्मलेन का आयोजन किया गया। माननीय समकक्षों में प्रो (डॉ) गौतम रॉय चौधरी शामिल रहे। चांसलर प्रो गौतम सेनगुप्ता, कुलपति, डॉ. मोहित चट्टोपाध्याय, रजिस्ट्रार, डॉ रीना पालोधी निदेशक, डॉ गगन पारिख मौजूद रहे। एसोसिएट डीन व एचओडी, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, डॉ संदीप रॉय चौधुरी, प्रोफेसर, प्रबंधन अध्ययन विभाग, प्रो सुजॉय विश्वास। निदेशक और सीईओ, पुरुषोत्तम सेन, डायरेक्टर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, श्री पार्थ दास विश्वास।

निदेशक (प्रवेश प्रकोष्ठ), डॉ शमीमा हक, प्रभारी, प्रबंधन अध्ययन विभाग, सौमित्र बैनर्जी चांसलर, ओएसडी, और दिलीप कुमार चक्रवर्ती वरिष्ठ प्रशिक्षक, एमजीएनसीआरई। बैठक का आयोजन टेक्नो इंडिया यूनिवर्सिटी द्वारा आगामी शैक्षणिक सत्र के लिए नए पाठ्यक्रम (अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए) के लॉन्च के बारे में चर्चा हेतु किया गया। प्रो चक्रवर्ती ने नए कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक समर्थन देने का आश्वासन दिया। डॉ रीना पालोधी ने जानकारी दी कि BOS मीटिंग एमजीएनसीआरई द्वारा तैयार और विकसित वेस्ट मैनेजमेंट एंड सोशल इंटरप्रेन्यौरशिप में एमबीए पाठ्यक्रम पर मंजूरी के लिए आयोजित की गयी है।

2 दिवसीय कार्यशाला - 17 और 18 अप्रैल प्रतिभागियों के साथ टेक्नो इंडिया यूनिवर्सिटी में 2 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ रीना पालोधी ने स्वागत भाषण दिया। डायरेक्टर और प्रोफेसर डी के चक्रवर्ती, वरिष्ठ प्रशिक्षक एमजीएनसीआरई ने

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य समझाया। उन्होंने कहा कि, छात्रों को न केवल आय का साधन भी बनना चाहिए अपितु समुदाय के सतत विकास के लिए भी योगदान देना चाहिए। सफल उद्यमी श्री अमित माल, हुल्लाडेक (Hulladek) ने ई-अपशिष्ट प्रबंधन पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि अनुसंधान की पीएलए विधि (PLA Method) ग्रामीण उद्यमिता के लिए अधिक कारगर है।

उन्होंने कहा कि उद्यमिता कोई नौकरी नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति की बुद्धि है उन्होनें जोर देते हुए कहा कि, उद्यमिता गतिविधि एक सामाजिक परिवर्तन लाती है व समाज का विकास करती है। उन्होंने सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में माइंड सेट के विभिन्न पहलुओं के बारे में भी बताया। सामाजिक उद्यमिता के लिए समूह की गतिशीलता, सामाजिक समस्याओं और सामाजिक परिवर्तन की पहचान के निर्धारित कारक हैं। उन्होनें सोशल एक्शन रिसर्च (समस्या की पहचान, उद्देश्य, आंकड़ों का स्रोत, आंकड़े संग्रहण, कार्य योजना एवं क्रियान्वयन की तैयारी) पर बात की। पीएलए/ पीआरए के महत्वपूर्ण तरीकों के रूप में उन्होंने पीआरए/पीएलए पद्धति के माध्यम से सामुदायिक अध्ययन पर विस्तार से चर्चा की।

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

विश्वविद्यालय के गणमान्य व्यक्ति प्रो एल.एन. सतपथी, निदेशक, एचआरडीसी/सीयू, डॉ. अमृता सेन, उपनिदेशक, एचआरडीसी/ सीयू, डॉ मधुरा दत्ता, सहायक प्रोफेसर, एचआरडीसी/सीयू, श्री अजॉय कुमार दास, अधीक्षक, एचआरडीसी/सीयू, श्री सौम्या भट्टाचार्य, असिस्टेंट लाइब्रेरियन

ग्रेड I, एचआरडीसी/सीयू, श्री असदुज्जमान बिस्वास, तकनीकी सहायक ग्रेड I, एचआरडीसी/सीयू। एमजीएनसीआरई के वरिष्ठ प्रशिक्षक ने एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी और नई तालीम के विकास के लिए नई तालीम, प्रायोगिक शिक्षा, सामुदायिक अनुबंध और आपदा प्रबंधन शिक्षा पाठ्यक्रम और उन्हें मुख्यधारा में लाने उच्च शिक्षा/विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में एमजीएनसीआरई के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने क्षमता निर्माण, ज्ञान वृद्धि लक्ष्यों और संभावित तरीकों को प्राप्त करने में कलकत्ता विश्वविद्यालय के सम्मानित यूजीसी-एचआरडीसी के उत्कृष्ट योगदान के बारे में भी बताया। एमजीएनसीआरईआर ग्रामीण अनुबंध के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रमों की सुविधा में एचआरडीसी के साथ सहयोग करता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से समुदाय अनुबंध में प्रशिक्षकों के शामिल होने की ज़रूरत और उद्देश्य को बताया और उसके द्वारा क्षेत्रीय व राष्ट्रीय विकास में भागीदारी की बात की।

उत्तरप्रदेश

जगद्गुरु रामभद्राचार्य हैंडीकैप्ड यूनिवर्सिटी (JRHU) चित्रकूट, 11 अप्रैल

गोलमेज सम्मलेन - 11 अप्रैल विश्वविद्यालय के गणमान्य व्यक्ति डॉ. जी.पी. दुबे, रजिस्ट्रार, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ महेन्द्र उपाध्याय, डीन, डॉ शशिकांत त्रिपाठी, कार्यक्रम समन्वयक, जय प्रकाश पांडे, कार्यक्रम अधिकारी, डॉ नीतू तिवारी, कार्यक्रम अधिकारी, एसपी मिश्रा, पीआरओ, डॉ पवन कुमार त्रिपाठी, पीओ एनएसएस, रवि प्रकाश प्रकाश शुक्ला, पीओ एनएसएस और एमजीएनसीआरई सीनियर फैकल्टी, डॉ अनिल कुमार दुबे पाठ्यक्रम की उपस्थिति और बीओएस स्थिति (BOS Status) के बारे में चर्चा फलदायी रही।

कार्यशाला - 12 अप्रैल माननीय कुलपति प्रो वाई सी दुबे, जेआरएचयू मुख्य अतिथि रहे। कार्यशाला में डॉ अनिल कुमार दुबे, सीनियर फैकल्टी, एमजीएनसीआरई के साथ 27 प्रतिभागी शामिल थे, जो अनुष्ठान को समायोजित कर रहे थे। कार्यशाला में शिक्षा विभाग और संबद्ध कॉलेजों और एनएसएस कार्यक्रम समन्वयकों के विभिन्न बीएड कॉलेजों के प्रशिक्षक शामिल थे। माननीय कुलपति प्रो वाई.सी. दुबे, जेआरएच विश्वविद्यालय ने एमजीएनसीआरई के साथ मिलकर कार्यशाला का उद्घाटन एवं सहयोग का स्वागत किया। उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्षमता, आत्मविश्वास निर्माण, सहनशीलता और कौशल के इर्द-गिर्द घूमती गांधीवादी विचारधारा के एकीकरण का स्वागत किया। इस सत्र में नई तालीम का अवलोकन किया गया, जिसके बाद प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा व्यक्तिगत रूप से स्कूली पाठ्यक्रम के लिए प्रायोगिक शिक्षण गतिविधि योजना तैयार की गई। गतिविधियाँ विभिन्न प्रकारों और व्यवहारिक पहलुओं से संबंधित थीं।

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

"ग्रामीण तन्मयता और सामुदायिक जुड़ाव व स्कूली पाठ्यक्रम" पर कार्यशाला – 6 अप्रैल

बी बी ए यूनिवर्सिटी लखनऊ

प्रोफेसर अरविंद कुमार झा, डीन, शिक्षा विभाग और स्टाफ के साथ गोलमेज सम्मेलन – 23 अप्रैल

डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

प्रो एस एन शुक्ला के साथ गोलमेज सम्मलेन - 30 मार्च

"रूरल इमर्शन एंड कम्युनिटी इंगेजमेंट" पर कार्यशाला - 19 अप्रैल

लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ में एनएसएस कर्मचारियों के साथ एक दिवसीय कार्यशाला - 24 अप्रैल

डी एस एम आर विश्वविद्यालय लखनऊ

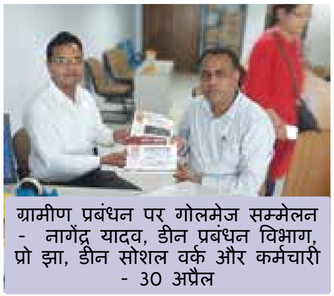

ग्रामीण प्रबंधन पर गोलमेज सम्मेलन - नागेंद्र यादव, डीन प्रबंधन विभाग, प्रो झा, डीन सोशल वर्क और कर्मचारी - 30 अप्रैल

सी एस जे एम विश्वविद्यालय कानपूर

एनएसएस समन्वयक, प्रमुख, प्रबंधन विभाग और कर्मचारियों के साथ ग्रामीण प्रबंधन पर राउंडटेबल - 26 अप्रैल

एफडीपी - तेलंगाना यूनिवर्सिटी सारंगपुर कैंपस निज़ामाबाद - 22 अप्रैल - 26 अप्रैल

नई तालीम पर 5 दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम- प्रायोगिक शिक्षण तेलंगाना विश्वविद्यालय सारंगपुर कैम्पस निजामाबाद में 22 से 26 अप्रैल तक आयोजित किया गया था। माननीय कुलपति प्रो पी सांबैया, प्रो के बलरामुलु, रजिस्ट्रार, डॉ पी शंकर ओयू, बीओएस चेयरमैन, प्रो त्रिवेणी, लैंग्वेजेस और यूसीओई के प्राध्यापक डॉ खेसर मोहम्मद कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य व्यक्ति रहे। समूहों के द्वारा की गई गतिविधियों व कार्य शिक्षा के लाभों पर चर्चा की गई। एफडीपी का उद्देश्य नई तालीम – प्रायोगिक शिक्षा, ग्रामीण लोच की अवधारणा के विभिन्न विषयों के संकाय सदस्यों को प्रशिक्षण देना है।

एमजीयू नालगोंडा

रजिस्ट्रेशन और कम्युनिटी इंगेजमेंट के बारे में प्रोफेसर डी संध्या रानी, प्रिंसिपल यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, एमजीयू नालगोंडा के साथ बैठक। एमजीएनसीआरई प्रशिक्षक झांसी ने बताया कि एमजीयू नलगोंडा ने यूबीए कार्यक्रम के तहत दाखिला लेने और अपनी परियोजना के काम में ग्रामीण जरूरतों के अनुसार नई तकनीकों में उपलब्ध प्रौद्योगिकी और विकास को अनुकूलित करने के लिए रुचि पैदा की है।

UBA कार्यक्रमों के बारे में माननीय कुलपति और रजिस्ट्रार के साथ बातचीत

जेएनटीयू हैदराबाद

एमजीएनसीआरई की वरिष्ठ प्रशिक्षक सरवानी पांडेय और प्रभाकर बनाला ने 29 अप्रैल को एचआरडीसी और यूबीए कार्यक्रमों पर चर्चा के लिए जेएनटीयू हैदराबाद का दौरा किया। डॉ.विश्वनाथ निदेशक एचआरडीसी ने उनके ओसी और आरसी कार्यक्रमों में पीआरए और पीएलए कार्यक्रमों के संचालन के लिए दो दिन आवंटित करने का आश्वासन दिया। माननीय। कुलपति ने विश्वविद्यालय में यूबीए गतिविधियों के लिए एक सीनियर संकाय समन्वयक को प्रभारी बनाने का आश्वासन दिया।

जेएनटीयू हैदराबाद में डॉ विश्वनाथ निदेशक यूजीसी-एचआरडीसी के साथ बातचीत

कलोजी नारायण राव यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ एंड साइंस, वारंगल

रमेश वी, सीनियर फैकल्टी एमजीएनसीआरई, डॉ करुणाकर रेड्डी, कुलपति, डॉ डी प्रवीण कुमार, रजिस्ट्रार और विश्वविद्यालय में अन्य मेडिकल फैकल्टीज़ द्वारा 12 अप्रैल को वारंगल के कालोजी नारायण राव स्वास्थ्य और विज्ञान विश्वविद्यालय में एक गोलमेज सम्मेलन किया गया

उस्मानिया यूनिवर्सिटी

एचआरडीसी के निदेशक प्रो राम रेड्डी के साथ उस्मानिया विश्वविद्यालय में गोलमेज सम्मेलन

एमएएनयूयू हैदराबाद

डॉ तहसीन बिलग्रामी उपनिदेशक HRDC के साथ गोलमेज बैठक मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय

सीएमआर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी हैदराबाद

डॉ वी ए नारायण, प्रिंसिपल और यूबीए समन्वयक डॉ मेरुगु सुरेश, डॉ एम नागाराजू नाइक के साथ गोलमेज सम्मेलन

आंध्रप्रदेश

विक्रम सिम्हापुरी विश्वविद्यालय, नेल्लोर

नई तालीम पर एक दिवसीय कार्यशाला - 23 अप्रैल

प्रो आर सुदर्शन राव, कुलपति, प्रो जवाहर बाबू, प्रिंसिपल, नरसिम्हा रेड्डी, परियोजना अधिकारी एसएसए, नेल्लोर और डॉ मधुमति हेड ऑफ़ डिपार्टमेंट, एजुकेशन कार्यशाला में उपस्थित थे।

राउंडटेबल - 20 अप्रैल को एचआरडीसी एसवी यूनिवर्सिटी

प्रो टी रामा श्री निदेशक एचआरडीसी के साथ

श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम तिरुपति

22 अप्रैल को श्री पद्मावतीमहिला विश्वविद्यालयम में नई तालीम पर गोलमेज चर्चा। प्रो अमुतवल्ली, शिक्षा विभाग के प्रमुख डॉ. अनुराधा, डॉ बेबी प्रसुना, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, डॉ ए सुनीता बाई, एसोसिएट प्रोफेसर, और डॉ टी सिरिषा सहायक प्रोफ़ेसर उपस्थित थे।

द्रविड़ियन यूनिवर्सिटी कुप्पम

"रूरल कम्युनिटी इंगेजमेंट" पर 24 अप्रैल को द्रविड़ियन यूनिवर्सिटी, कुप्पम में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

उद्घाटन भाषण देते हुए माननीय कुलपति

इससे पूर्व 27 मार्च को द्रविड़ विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो सुधाकर येदला की अध्यक्षता में रूरल कम्युनिटी इंगेजमेंट को पाठ्यक्रम में शामिल करने के तरीकों और साधनों के बारे में चर्चा करने के लिए रूरल इमर्शन पर एक गोलमेज सम्मेलन का आयोजित किया गया था।

कार्यशाला में विश्वविद्यालय विभागों और एनएसएस कार्यक्रम अधिकारियों के अत्यधिक उत्साही प्रशिक्षक शामिल थे।

डॉ श्यामला, एसोसिएट प्रोफेसर और हेड इंचार्ज, सामाजिक कार्य विभाग ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ आर यसोदा, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख इंचार्ज,, शिक्षा विभाग और एचआरडी ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और कार्यशाला के उद्देश्यों को भी प्रस्तुत किया।

गेस्ट ऑफ ऑनर, श्री रमना, एमपीडी, गुडुपाली मंडल ने ग्रामीण जीवन, ग्रामीण समस्याओं और संसाधनों को समझने के महत्व के बारे में बताया। अपने स्वयं के अनुभवों को दर्शकों के साथ साझा करते हुए, उन्होंने महसूस किया कि ग्रामीण संस्कृति और परंपरा ग्रामीण स्थिति को प्रभावित करती है, लोगों को और विशेष रूप से उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि ग्रामीण लोगों की समस्याओं की पहचान करने और उनकी समस्याओं के कारणों का विश्लेषण करने व उपयुक्त समाधान सुझाने के लिए सहभागी दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है। सभा को संबोधित करते हुए, माननीय कुलपति, प्रो येदला सुधाकर ने अपने उद्घाटन भाषण में उल्लेख किया कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास से पहले भी ग्रामीण लोगों के पारंपरिक ज्ञान ने लोगों की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा संस्थानों को आस-पास के गांवों से जोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने ग्रामीण जुड़ाव के लिए कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया रूरल इमर्शन गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए एनएसएस के साथ-साथ सामाजिक कार्य और शिक्षा विभागों को सलाह दी। धन्यवाद ज्ञापन का प्रस्ताव द्रविड़ विश्वविद्यालय के एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ ए के वेणुगोपाल रेड्डी द्वारा प्रस्तावित किया गया था। प्रतिभागियों के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप से और कार्यशाला में समूहों में चर्चा के दौरान प्रतिभागियों के बीच विचार-विमर्श के माध्यम से जाना, और उनमें से कई के पास एक या अधिक पहलुओं बारे में शिक्षा शास्त्र संबंधी दृष्टिकोण हैं।

डॉ एस विजयावर्धिनी, असिस्टेंट प्रो, प्रो एस पेंचाला, रजिस्ट्रार, श्रीमती वी. मर्सी ज्योति, असिस्टेंट प्रो, शिक्षा विभाग, श्रीमती वी सरस्वती ने कार्यक्रम के लिए बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।

महाराष्ट्र

पुण्यशलोक अहिल्यादेवी होल्कर विश्वविद्यालय, सोलापुर - 15 अप्रैल

15 अप्रैल को पुण्यशलोक अहिल्यादेवी होल्कर विश्वविद्यालय, सोलापुर में एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया। प्रो मृणालिनी फडणवीस कुलपति, सीनियर फैकल्टी डॉ वसंत कोरे, डीन, सामाजिक विज्ञान, यूनिवर्सिटी एनएसएस प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर की ओर से डॉ पीएन कोलेकर, सीनियर फैकल्टी डॉ श्रीमती एम जे पाटिल और चेयरपर्सन बीओएस एजुकेशन सोलापुर रीजन डॉ श्री पी आर भोज उपस्थित रहे।.

शिवाजी यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर - 16 अप्रैल

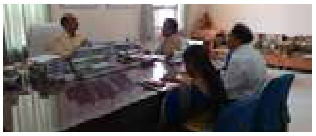

शिवाजी विश्वविद्यालय में 16 अप्रैल को एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया। डॉ डी टी शिर्के, वाइस चांसलर, डॉ पी पटनकर, एचओडी शिक्षा विभाग, पीएमएमएमएनएमटीटी के निदेशक प्रो.आर के कामत उपस्थित थे। प्रो भारती पाटिल, गांधीवादी अध्ययन केंद्र के समन्वयक और डॉ आर.वी. गौरव, डीन, छात्र कल्याण विभाग के साथ भी बातचीत हुई।)

एफडीपी - यूनिवर्सिटी ऑफ़ मुंबई सब कैंपस, ठाणे, 30 अप्रैल से 4 मई

नई तालीम पर पांच दिवसीय एफडीपी- प्रायोगिक शिक्षा- सामुदायिक अनुबंध का आयोजन मुंबई विश्वविद्यालय में किया गया। मुंबई से लगभग 50 किलोमीटर दूर नेरल के पास डेल्हीवली गांव, सामुदायिक अनुबंध और टाइपोलॉजी गतिविधि के लिए ठाणे का दौरा किया गया। PRA और PLA के सभी गतिविज्ञान का अनुसरण किया गया। 27 प्रतिभागी शामिल थे। एमजीएनसीआरई सीनियर फैकल्टी नवीन कुमार ने कार्यवाही का समन्वय किया। प्रो श्रीमती सुनीता मगरे, मुंबई विश्वविद्यालय के ठाणे सब कैंपस की निदेशक और बीओपीएस की अध्यक्ष, शिक्षा विभाग ने एफडीपी की देखरेख की। कार्यक्रम में मुंबई के वाइस चांसलर, डॉ समीर कुलकर्णी, नैनो टेक्नोलॉजी विभाग, मुंबई के डायरेक्टर इंचार्ज, गेस्ट ऑफ ऑनर, डेल्हीवली के सरपंच, मुंबई विश्वविद्यालय के सरपंच और विभिन्न 7 बीएड कॉलेज के प्रिंसिपल

कार्यक्रम में सक्रिय भागीदार रहे। मुंबई विश्वविद्यालय ने नई तालीम, प्रायोगिक शिक्षा और सिद्धांत और व्यवहार के साथ सामुदायिक जुड़ाव पर एकीकृत पाठ्यक्रम के लिए 4 क्रेडिट अंक के साथ बीओएस उत्तीर्ण किया है। पाठ्यक्रम जुलाई 2019 तक लागू करने के लिए तैयार है।

एफडीपी - डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय (BAMU), औरंगाबाद 31 मार्च - 4 अप्रैल

आजची पिढी भावनिक विकासाचा अभाव असणारी – एस.हरिथा

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद में नई तालीम, प्रायोगिक शिक्षा और कार्य शिक्षा पर एफडीपी का आयोजन 31 मार्च से 4 अप्रैल तक किया गया था। यह शिक्षा विभाग द्वारा मुख्य अतिथि प्रोफेसर शोभना जोशी, एचओडी, शिक्षा, बीएएमयू के साथ आयोजित किया गया था। अन्य विश्वविद्यालय के गणमान्य व्यक्ति डॉ उज्ज्वला भदंगे मौजूद थे। एमजीएनसीआरई सीनियर फैकल्टी हरीथा एस ने पूजा वारयानी के साथ कार्यवाही का समन्वय किया। इसका उद्देश्य प्रायोगिक शिक्षण की दृष्टि और दर्शन को समझना था - गांधीजी की नई तालीम पाठ्यचर्या, प्राप्त कौशल और ज्ञान का अनुभव करना और "तीन एच" के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षण गतिविधियों में भाग लेना था।

डॉ उज्ज्वल भड़गे ने फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम - एक्सपेरिमेंटल लर्निंग - गांधीजी का अवलोकन साझा किया,नई तालीम "युवा राष्ट्रीय विकास के लिए योगदान दे रहा है। यह विषम समूह मुझे त्रिवेणी संगम (छात्रों, शिक्षकों और युवाओं के समूह) की याद दिलाता है। प्रो शोभना जोशी ने अपने उद्घाटन भाषण में संकाय विकास कार्यक्रम सामग्री की सराहना की और कहा कि यह एक बेहतरीन गतिविधि रही।

हिमाचल प्रदेश

एफडीपी - केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला - 25 मार्च से 31 मार्च

25 मार्च से 31 मार्च, 2019 तक, नई तालीम, प्रायोगिक शिक्षा, कार्य शिक्षा और सामुदायिक सहभागिता पर केंद्रीय विद्यालय, हिमाचल प्रदेश के स्कूल ऑफ एजुकेशन द्वारा सात दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन 25 मार्च को माननीय कुलपति प्रो (डॉ) कुलदीप चंद अग्निहोत्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि ड सुरेश कुमार सोनी, हिमाचल प्रदेश बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन, धर्मशाला के चेयरमैन, डॉ मनोज सक्सेना, एफडीपी के संयोजक, प्रो बलदेव भाई शर्मा और डॉ डी एन दास, असिस्टेंट डायरेक्टर,एमजीएनसीआरई सहित सात राज्यों - एचपी, उत्तराखंड, यूपी, बिहार, राजस्थान, दिल्ली और गुजरात के 29 प्रतिभागियों की उपस्थिति थी।

2 अप्रैल को हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में एनएसएस कार्यक्रम के माध्यम से सामुदायिक जुड़ाव पाठ्यक्रम शुरू करने पर एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया था।

मध्यप्रदेश

पांडिचेरी यूनिवर्सिटी

रांची यूनिवर्सिटी

11 अप्रैल - कस्तूरबा गांधी की 150 वीं जयंती पूरे भारत में नई तालीम दीक्षा दिवस के रूप में मनाई गई

मणिपुर

पश्चिम बंगाल

दिल्ली

"मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है" – कस्तूरबा गाँधी

सत्यमेव जयते

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

उच्च शिक्षा विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

5-10-174, शक्कर भवन, ग्राउंड फ्लोर, फ़तेह मैदान रोड, हैदराबाद, तेलंगाना - 500 004. तेलंगाना राज्य. दूरभाष: 040-23422112, 23212120, फैक्स: 040-23212114 ई-मेल: editor@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.in

संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यूजी प्रसन्ना कुमार, अध्यक्ष एमजीएनसीआरई, डॉ. डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया वी और शिवराम जी, श्री पी मुरली मनोहर सदस्य-सचिव एमजीएनसीआर द्वारा प्रकाशित